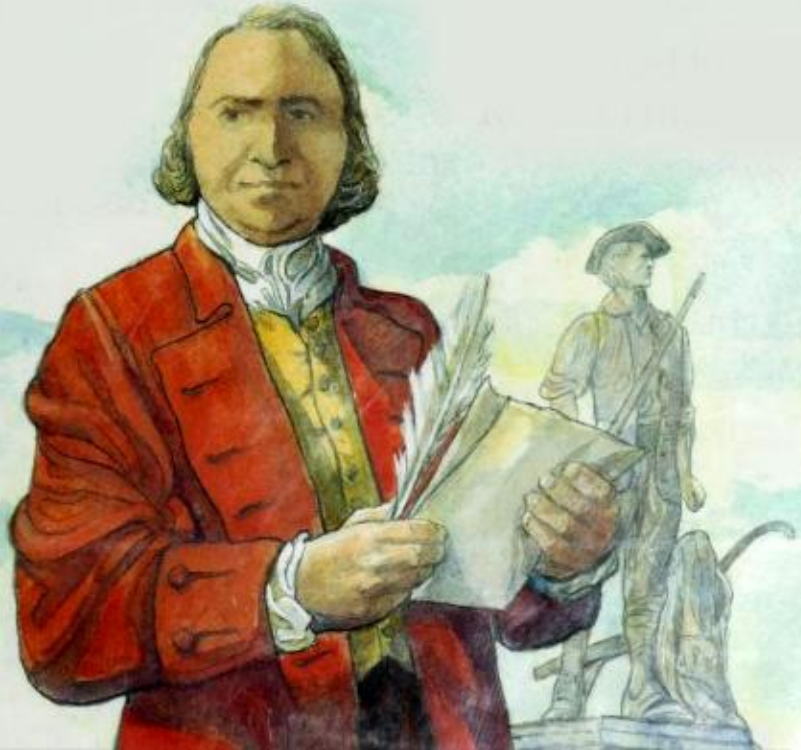


सैम्युल एडम्स

डेविड, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : मीनू नेगी रौथाण



यह सैमयुल एडम्स की कहानी है. वो एक अमेरिकी देशभक्त और संयुक्त राज्य के संस्थापक थे. उन्होंने अप्रवासियों पर लगाए गए अनुचित ब्रिटिश करों के बारे में लिखा और आवाज़ उठाई. एडम्स ने **बोस्टन टी पार्टी** और **संस ऑफ़ लिबर्टी** का गठन किया - जिसने विद्रोह क्रांतिकारी युद्ध को आगाज दिया. वह पहली और दूसरी महाद्वीपीय कांग्रेस के भी प्रतिनिधि और 1776 में स्वतंत्रता के घोषणापत्र के हस्ताक्षरकर्ता भी थे. एडम्स अपनी मृत्यु तक स्वतंत्रता के संघर्ष का नेतृत्व करते रहे.

इस पुस्तक में डेविड ने युवा पाठकों के लिए एक प्रेरक नायक को प्रस्तुत किया है - जिसमें स्वतंत्रता के प्रति दृढ़ निश्चय और कुछ अलग कर दिखाने का संकल्प था.

सैमयुल एडम्स

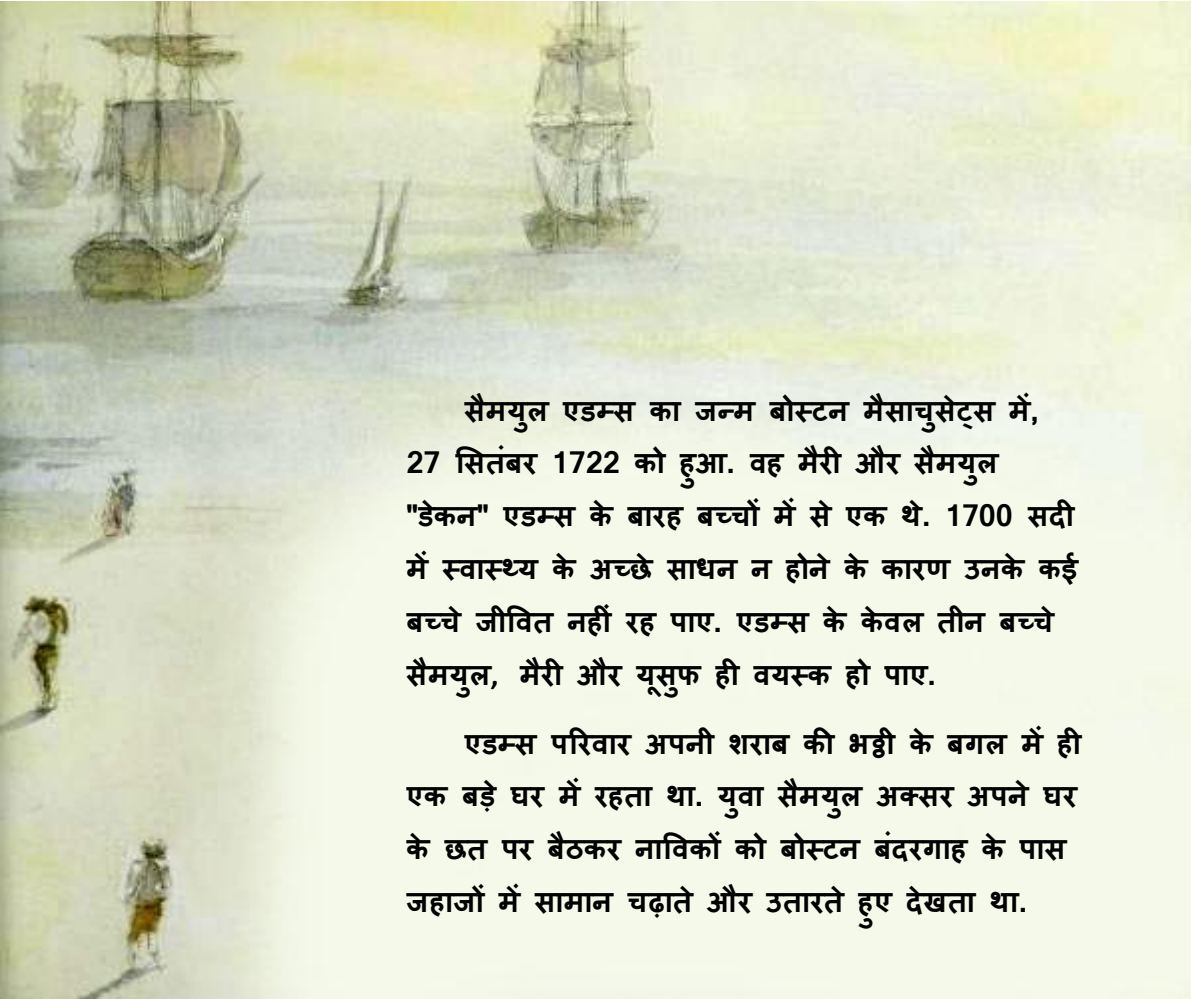
डेविड, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : मीनू नेगी रौथाण





सैमयुल एडम्स एक अमरीकी देशभक्त थे – उनका व्यक्तित्व तेजतर्र था. एक अंग्रेज लेखक ने उनके बारे में लिखा कि “उनकी कलम की हर डुबकी, एक डंक मारने वाले सांप की तरह होती थी.” उनके पत्रों, लेखों और भाषणों ने तेरह अमरीकी उपनिवेशों की क्रांति को आगे बढ़ाने में पूर्ण सहयोग दिया.





सैमयुल एडम्स का जन्म बोस्टन मैसाचुसेट्स में,
27 सितंबर 1722 को हुआ. वह मैरी और सैमयुल
"डेकन" एडम्स के बारह बच्चों में से एक थे. 1700 सदी
में स्वास्थ्य के अच्छे साधन न होने के कारण उनके कई
बच्चे जीवित नहीं रह पाए. एडम्स के केवल तीन बच्चे
सैमयुल, मैरी और यूसुफ ही वयस्क हो पाए.

एडम्स परिवार अपनी शराब की भट्टी के बगल में ही
एक बड़े घर में रहता था. युवा सैमयुल अक्सर अपने घर
के छत पर बैठकर नाविकों को बोस्टन बंदरगाह के पास
जहाजों में सामान चढ़ाते और उतारते हुए देखता था.

सैमयुल की मां ने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया. फिर छह साल की उम्र में माता-पिता ने उसे बोस्टन ग्रामर स्कूल भेजा.

सैमयुल अच्छे छात्र थे. वे पढ़ना-लिखना पसंद करते थे. "पढ़ने-सीखने का मूल्य, धन से अधिक है," यह उन्होंने अपनी कॉपी के हाशिये में लिखा था.

चौदह साल की उम्र में उन्होंने हार्वर्ड कॉलेज में प्रवेश लिया. उन्होंने इतिहास और दर्शन का अध्ययन किया. उन्हें जल्द ही अहसास होने लगा की उनकी लोगों के अधिकारों में ज्यादा रुचि थी और वे राजनैतिक जीवन की तरफ बढ़ रहे थे.

1743 में, सैमयुल एडम्स को हार्वर्ड की उन्नत डिग्री से सम्मानित किया गया. मैसाचुसेट्स के रॉयल गवर्नर के समक्ष एडम्स ने स्नातक की उपाधि के समय भाषण भी दिया.

क्रांतिकारी युद्ध शुरू होने के बहुत साल पहले ही एडम्स ने लोगों को उनके अधिकारों के बारे में बताया और उन्हें शासकों के विरोध के लिए उकसाया.







पढ़ाई के बाद एडम्स ने बोस्टन बैंक में काम करना शुरू किया। लेकिन वह अपना बहुत समय राजनीति में व्यतीत करते थे और बहुत कम समय ही बैंक में। इस वजह से जल्द ही उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। उनके पिता ने उन्हें अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए पैसे दिए, लेकिन एडम्स ने वो पैसे अपने एक दोस्त को दे दिये जिसने उन्हें कभी वापिस नहीं किया। फिर बाद में एडम्स अपने पिता की शराब की भट्टी में काम करने के लगे। लेकिन उन्होंने काम की तुलना में राजनीति में अधिक वक्त बिताया।

1747 में एडम्स और उनके कुछ दोस्तों ने एक अखबार शुरू किया, **पब्लिक एडवर्टाइजर**। अखबार के पहले ही अंक में उन्होंने स्थानीय ब्रिटिश सरकार पर धावा बोला।

17 अक्टूबर 1749 को, सैमयुल ने एक मंत्री की बेटी एलिजाबेथ चेकली से विवाह किया.

सैमयुल और एलिजाबेथ ने छह बच्चों को जन्म दिया, लेकिन उनमें से केवल दो ही बच्चे - सैमयुल और हन्ना ही बच पाए. 25 जुलाई, 1758 को, एक दुखद गर्भावस्था के तुरंत बाद एलिजाबेथ की मृत्यु हो गई.

1764 में सैमयुल ने एलिजाबेथ "बेट्सी" वेल्स से शादी की. सैमुएल को शादी में उपहार के रूप में "सरी" नाम की एक घरेलू दास मिली. एडम्स, गुलामी में विश्वास नहीं करते थे और उसने तुरंत उसे रिहा किया. सरी ने, बेट्सी और सैमुअल एडम्स के साथ रहने का खुद फैसला किया और अपनी इच्छानुसार उनके लिए काम किया.

बेट्सी एडम्स का अपना कोई बच्चा नहीं था, लेकिन उसने अपने सौतेले बच्चों - सैमयुल और हन्ना के पालन पोषण में मदद की.



1755 में, अमेरिका में अंग्रेजों और फ्रेंच के बीच लड़ाई शुरू हुई – यह फ्रेंच और इंडियन युद्ध की शुरुआत भी थी. यह लड़ाई 1763 तक समाप्त नहीं हुई.

इस युद्ध की लागत के भुगतान के लिए अंग्रेजी संसद ने, अमरीकी कॉलोनिशों पर नए टैक्स लगाए. 1764 में चीनी अधिनियम के तहत शीरे पर टैक्स लगा. 1764 स्टैम्प अधिनियम के अंतर्गत अमरीकी कॉलोनिशों में बेचे जाने वाले सभी मुद्रण सामानों पर टैक्स लगाया गया.

संसद में अमरीकी कॉलोनिशों का प्रतिनिधि करने वाला कोई नहीं था. जेम्स ओटिस (मैसाचुसेट्स असेंबली के सदस्य) को इस बात का बहुत दुःख हुआ. उनके अनुसार “प्रतिनिधित्व के बिना टैक्स लगाना सरासर अत्याचार था.”

नगर बैठकों में एडम्स ने भी करों की खिलाफत की. उन्होंने समाचार पत्रों में रोश भरे पत्र लिखे और मदद करने वाले लोगों को एक समूह में संगठित किया जिसका नाम रखा गया *सन्स ऑफ़ लिबर्टी*.



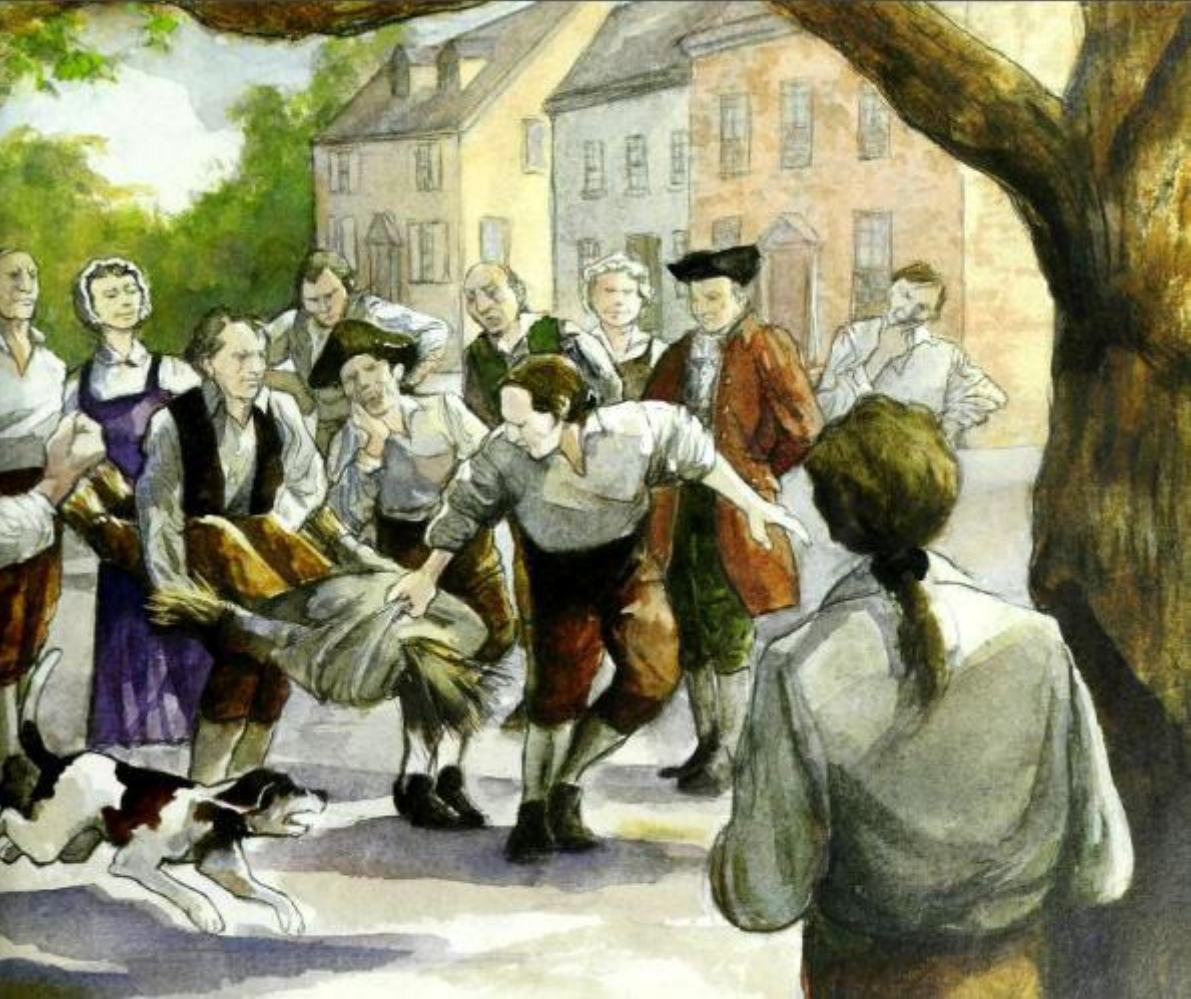
समूह ने एक विशाल वृक्ष के नीचे मुलाकात की और उस वृक्ष को नाम दिया गया **लिबर्टी ट्री**. 13 अगस्त, 1765 को उन्होंने एक ब्रिटिश टैक्स एजेंट के पुतले को एक बड़े जूते से साथ पेड़ से लटका दिया ताकि वे लार्ड बूट - जो राजा के सलाहकार थे, के प्रति अपनी नफरत जाहिर कर सकें.

अगली रात **सन्स ऑफ़ लिबर्टी** समूह के लोगों ने एजेंट के घर की खिड़कियों पर पत्थर फेंके और उसके कार्यालय को नष्ट कर दिया. सितंबर 1765 में एडम्स, मैसाचुसेट्स विधानसभा के सदस्य चुने गए. वहां उन्होंने जेम्स ओटिस के साथ मिलकर अक्टूबर 1765 के टिकट अधिनियम कांग्रेस को व्यवस्थित करने में मदद की.

एडम्स कांग्रेस में शामिल नहीं हुए, लेकिन वे नौ कालोनियों का प्रतिनिधित्व करते थे. उन्होंने न्यूयॉर्क में सभा बुलाई और घोषणा की कि 1 नवम्बर, जिस दिन टैक्स कानून बनेगा वो एक उपवास और शोक का दिन होगा.

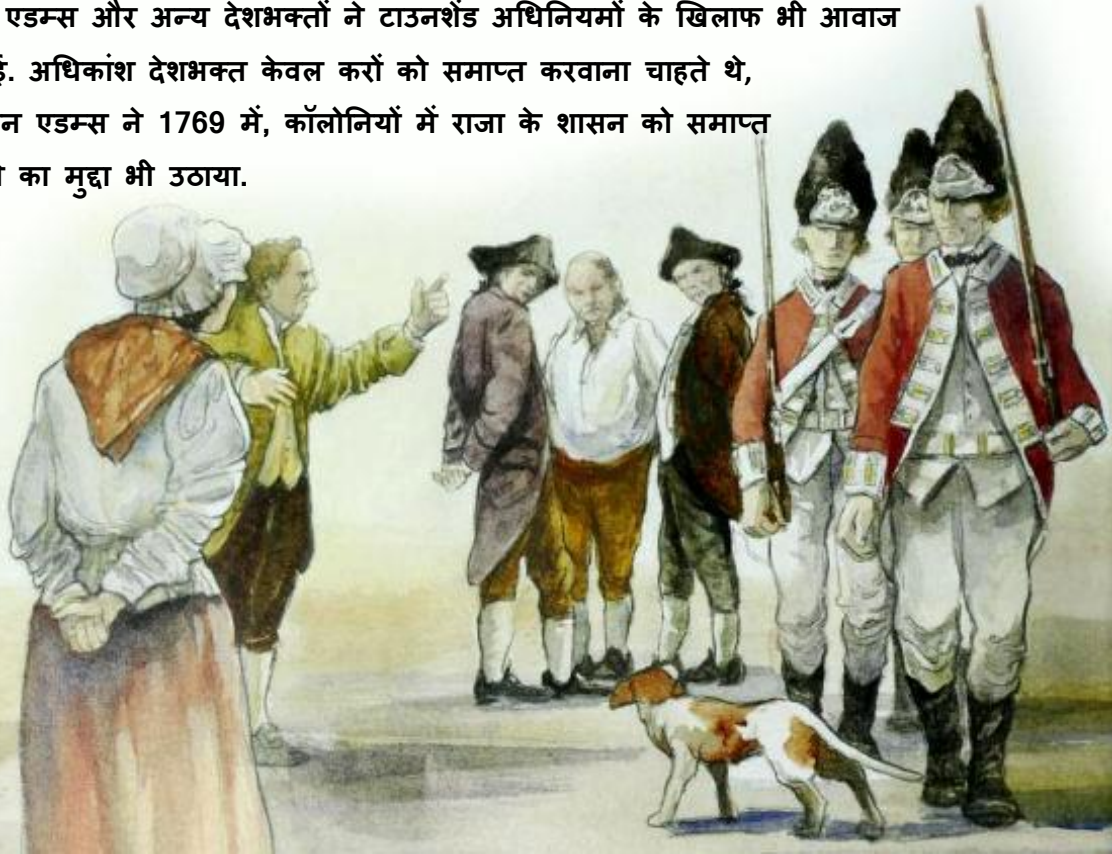
विरोध प्रदर्शन सफल रहा. 1766 के प्रारंभ में संसद ने स्टैम्प अधिनियम को निरस्त कर दिया. जब यह समाचार बोस्टन पहुंचा तो **लिबर्टी ट्री** के आसपास भीड़ इकट्ठा हुई और उन्होंने रॉकेट, मोमबत्तियों और बैनर के साथ जश्न मनाया.





अंग्रेजी सरकार अभी भी कर्ज में थी, इसलिए 1767 में संसद ने टाउनशेंड अधिनियमों के अंतर्गत - कांच, सीसा, कागज, पेंट और चाय पर भी टैक्स लगाया.

एडम्स और अन्य देशभक्तों ने टाउनशेंड अधिनियमों के खिलाफ भी आवाज उठाई. अधिकांश देशभक्त केवल करों को समाप्त करवाना चाहते थे, लेकिन एडम्स ने 1769 में, कॉलोनियों में राजा के शासन को समाप्त करने का मुद्दा भी उठाया.



ब्रिटिश सरकार के खिलाफ प्रतिरोध शुरू हुआ.

बोस्टन के लोग ब्रिटिश सैनिकों से नफरत करते थे.

बोस्टन के लोग, ब्रिटिश सैनिकों को **रेडकोट** के नाम से बुलाते थे.



मार्च 5, 1770 को, उपनिवेशवादियों का एक समूह कुछ सिपाहियों पर चिल्लाया और उन्होंने उनपर बर्फ के गोले फेंकने शुरू किए. सिपाहियों ने तब पांच लोगों को गोलियों से मार डाला. इसे बाद में **बोस्टन नरसंहार** के नाम से जाना गया.

इस नरसंहार के बाद, एडम्स ने एक समिति का गठन किया जिससे ब्रिटिश सैनिकों को बोस्टन से बाहर निकाला जा सके. उन्होंने लेफ्टिनेंट गवर्नर को चेतावनी दी, “अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो यह आपके लिए जोखिम भरा होगा.” इस घटना के एक हफ्ते के भीतर ही, सैनिकों को शहर के केंद्र से हटाया गया.

इस मुश्किल घड़ी में एडम्स ने अन्य कॉलोनिनों के लोगों को पत्र लिखा और उन्हें बोस्टन की स्थिति से अवगत कराया.

1772 की एक नगर बैठक में उन्होंने मैसाचुसेट्स के लोगों के अधिकारों को घोषित करने और अन्य उपनिवेशों में देशभक्तों के संपर्क में रहने के लिए एक समिति आयोजित की.





नवंबर 1773 में, बोस्टन बंदरगाह में चाय से भरे हुए तीन जहाजों को देशभक्तों ने गवर्नर से इंग्लैंड वापस भेजने को कहा। गवर्नर ने यह करने से इंकार कर दिया।

16 दिसंबर को, जहाजों को खाली करने से एक दिन पहले, एडम्स समेत हजारों देशभक्त बोस्टन पहुंचे। उन्होंने एक दूत को राज्यपाल के पास फिर से भेजा और जहाजों को वापिस भेजने को कहा। जब गवर्नर ने जवाब नहीं दिया, तो एडम्स ने घोषणा की, “यह बैठक देश को बचाने के लिए और कुछ नहीं कर सकती!”

एडम्स के भाषण के बाद, *सन्स ऑफ़ लिबर्टी* के सदस्य जहाजों पर चढ़ गए और उन्होंने 342 चाय के संदूकों को खोला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया। इस अवज्ञा को *बोस्टन टी पार्टी* कहा गया और उसने लोगों को क्रांतिकारी युद्ध के लिए प्रेरित किया।

जब *बोस्टन टी पार्टी* की खबर इंग्लैंड पहुंची तो वहां पर संसद के सदस्य बहुत गुस्सा हुए। सबसे पहले उन्होंने बोस्टन हार्बर को बंद करने का फैसला किया। बाद में उन्होंने शहर की बैठकों को गैरकानूनी घोषित किया और *रेडकोट* सिपाहियों को उपनिवेशों के घरों में रहने का आदेश दिया।







सितंबर 1774 को सैमयुल एडम्स और बारह कॉलोनिनों के पचास से अधिक प्रतिनिधियों ने, इंग्लैंड के साथ अपनी समस्याओं पर चर्चा करने के लिए फर्स्ट कॉन्टिनेंटल कांग्रेस में, फिलाडेल्फिया में मुलाकात की. उन्होंने संसद को, विरोध का एक संदेश भी भेजा. उन्होंने युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए हथियार इकट्ठा करने का निर्णय भी लिया.

ब्रिटिश शासन का मानना था कि वो विद्रोहियों को रोकने का उचित समय था.

18 अप्रैल 1775 को, अमेरिका में ब्रिटिश सैनिकों के कमांडर जनरल थॉमस गेज ने, कॉनकाईड, मैसाचुसेट्स में छिपे हुए हथियारों को नष्ट करने के लिए सैकड़ों **रेडकोट** सैनिकों को भेजा. वहां से वे लेक्सिंगटन गए और वहाँ जाकर उन्होंने सैमयुल एडम्स और जॉन हैनकाँक को गिरफ्तार किया. गेज ने दो देशभक्तों को इंग्लैंड भेजने की योजना बनाई. वहां उन दोनों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाएगा.





सनस ऑफ़ लिबर्टी के दो सदस्य - पॉल रेवेरे और विलियम डेव्स भी बोस्टन से रवाना हुए. 19 अप्रैल की आधी रात वे लेक्सिंगटन पहुंचे. उन्होंने एडम्स और हैनॉक को, जो जंगल में छिपे थे को सावधान किया. बाद में ब्रिटिश ने, लेक्सिंगटन से रेवेरे को भी पकड़ लिया. डेव्स भी अपने घोड़े से गिर गए, लेकिन सैमयुल प्रेस्कॉट सवारी करता रहा और वहाँ देशभक्तों को सतर्क करता रहा.

सुबह होते ही क्रांतिकारियों ने हमला बोला और पहला गोला दागा. एडम्स एक पहाड़ी के पीछे से देखते हुए बोले, “वाह! यह अमेरिका के लिए एक शानदार सुबह है!”

जनरल गेज को उम्मीद थी कि देशभक्त विद्रोह छोड़ देंगे. जून में जनरल गेज ने एडम्स और हैनकॉक को छोड़कर, बाकी उन सभी लोगों को माफ़ करने की पेशकश की जिन्होंने **रेडकोट** सिपाहियों के खिलाफ हथियार उठाए थे. उसने एडम्स और हैनकॉक को आदम-गद्दार करार दिया और उनको पकड़वाने वाले को पुरस्कार देने का वादा किया. लेकिन किसी ने भी ऐसा नहीं किया.







एडम्स ने फिलाडेल्फिया में दूसरी महाद्वीपीय कांग्रेस में मैसाचुसेट्स का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 1776 में, स्वतंत्रता के घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। 1789 तक एडम्स ने महासंघ के लेख को लिखने में मदद की जो संयुक्त राज्य को नियंत्रित करने वाले नियम बने। बाद में वो संविधान की नींव बने।

1781 की शुरुआत में एडम्स अपने घर गए और उसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन बोस्टन में ही व्यतीत किया।

1783 में ब्रिटिश सरकार ने एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए और नए राष्ट्र - संयुक्त राज्य अमेरिका को मान्यता दी।

सैम्युल एडम्स, मैसाचुसेट्स की राजनीति में व्यस्त रहे। 1782 में वह राज्य सेनेट के लिए चुने गए। 1798 में, जब जॉन हेनकॉक मैसाचुसेट्स के गवर्नर चुने गए, तब एडम्स को लेफ्टिनेंट गवर्नर चुना गया। चार साल बाद हेनकॉक की मृत्यु हो गई और एडम्स राज्यपाल बन गए।

1796 में, सैमयुल के चचेरे भाई जॉन एडम्स, राष्ट्रपति के लिए मनोनीत हुए, लेकिन सैमयुल ने उन्हें समर्थन नहीं दिया. जॉन एडम्स एक संधीवादी थे, उनका एक मजबूत केंद्र सरकार में विश्वास था. सैमयुल ने उनके प्रतिद्वन्दी - थॉमस जेफरसन का समर्थन किया, जो राज्यों और लोगों को ज्यादा अधिकार और शक्ति देने में यकीन करते थे.

1797 में, जॉन एडम्स राष्ट्रपति बने, लेकिन जेफरसन ने उन्हें अगले चुनाव में पराजित कर दिया. तब तक सैमयुल एडम्स वृद्ध भी हो चले थे. उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं चल रहा था. जनवरी 1797 में वो सार्वजनिक जीवन से सेवानिवृत्त हो गये.

2 अक्टूबर 1803 को पत्नी एलिजाबेथ के समक्ष सैमयुल एडम्स की मौत हो गई. तब वो 81 वर्ष के थे.

सैमयुल एडम्स ने एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक अमरीकी राष्ट्र के सपने को पूरा करने के लिए काम किया था. उनके निरंतर प्रयास के लिए उन्हें अक्सर अमरीकी क्रांति का पितामह कहा जाता है.



महत्वपूर्ण तिथियाँ

27 सितंबर 1722	बोस्टन में जन्म
1743	हार्वर्ड कॉलेज से मास्टर्स डिग्री
17 अक्टूबर 1749	एलिजाबेथ चकली से विवाह
1731	पुत्र सैमयुल का जन्म
1736	बेटी हन्ना का जन्म
25 जुलाई, 1758	एलिजाबेथ चकली एडम्स का निधन
6 दिसंबर 1764	एलिजाबेथ "बेट्स" वेल्स से विवाह
13,14 अगस्त 1765	बोस्टन में स्टैम्प एक्ट का विरोध
22 फरवरी 1766	स्टैम्प एक्ट निरस्त किया
5 मार्च 1770	बोस्टन नरसंहार
16 दिसंबर 1773	बोस्टन टी पार्टी
19 अप्रैल 1775	रेवल्यूशन की पहली लड़ाई; सैमयुल एडम्स और जॉन हेनकॉक बच निकले
1776	स्वतंत्रता की घोषणा के संकेत
1783	पेरिस संधि पर हस्ताक्षर
1789	मैसाचुसेट्स के निर्वाचित लेफ्टिनेंट गवर्नर
1793	जॉन हेनकॉक की मौत
2 अक्टूबर 1803	बोस्टन में निधन

